RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2022-24
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

अगस्त–2023 | वर्ष – 15 | अंक : 07 | मूल्य : 5/-

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल) मो.: 8299162841
हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख – रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :
राजकुमार, उन्नाव
मो.: 9889273743, 9392660070
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख
रमा गजभिये, मो.: 7828273934
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001, मो. : 09887512360, 0144-3201516
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें –
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020 • IFSC CODE-SBIN0001784

परिशिष्ट–5 वेदों की निर्भ्रान्तता

हिन्दुओं से यह आशा की जाती है कि वे प्रतिदिन वेद पाठ करें। शतपथ ब्राह्मण में इसके कारण बताए गए हैं। उसका कहना है:

''केवल ये पांच महा त्याग हैं, जिनका अत्यधिक महत्व है जैसे, जीव जन्तुओं को दाना आदि चुगाना, मनुष्यों को दान, पिता की सेवा, भगवत् पूजा, और वेद पाठ (ब्रह्म यज्ञ) 2. जीवित प्रणियों को प्रतिदिन दाना पानी दें। उनके प्रति इतना ही कर्तव्य है। किसी को कुछ न कुछ दान प्रतिदिन दें। चाहे कटोरी भर पानी ही पिलाएं, मान के प्रति दान–दक्षिणा का कर्तव्य पूरा हो जाता है। ईश्वर की पूजा में भी प्रतिदिन भागीदार बनना चाहिए। यहां तक कि लकड़ी का गठ्ठा चढाकर भी। यह ईश्वर की भक्ति पूर्ण हुई। 3. अब हैं वेदों के प्रति कर्तव्य। इसका अर्थ है उनका एकांत पाठ। इस कार्य में वाणी जुहू है, आत्मा उपभृत है, नेत्र ध्रुव हैं और बुद्धि श्रुव है। सत्य अर्पण है और स्वर्ग लक्ष्यसिद्धि। जो इसे जानकर प्रतिदिन वेद–पाठ करता है, वह अविकारी लोक में जाता है। वह विद्यमान से तीन गुना बड़ा लोक है। उस लोक में सम्पदा का साम्राज्य है। इसलिए वेदों का अध्ययन किया जाए। 4. ऋग्वेद की ऋचाएं भगवान के लिए दूध का अर्ध्य है। जो इसे जानता है वह प्रतिदिन वेद पाठ करता है। प्रतिदिन भगवान को दुग्ध अर्पण से संतुष्ट करता है और देवता संतुष्ट होकर उसे धनधान्य से सम्पन्न, स्वास्थ्य, पौरूष तथा दैहिक शक्ति प्रदान करते हैं। उन्हें विलक्षण वरदान देते हैं। पिता की सेवा से घी और शहद की नदियां बहती है। 5. ईश्वर के लिए यजुस मंत्रों का पाठ घी की आहुति है। जो इसे जानता है, जो इनका नित्य पाठ करता है, वह देवताओं को घी की आहुति से प्रसन्न करता है और वे संतुष्ट होकर, उसे संतुष्ट करते हैं (पूर्वोक्त की भांति)। 6. सामवेद के मंत्र देवताओं को सोम का तर्पण करता है। जो यह जानता है, वह प्रतिदिन इनका पाठ करता है। देवताओं को सोम का तर्पण करता है और वे संतुष्ट होकर आदि (पूर्वाक्तानुसार) 7. अथर्वन और आंगिरस (अर्थर्वांगिरस) के मंत्र देवताओं को वसा का अर्पण करते हैं। जो इसे जानता है, वह इनका नित पाठ करता है और देवताओं को वसा से संतुष्ट करता है और वे आदि (पूर्वोक्तानुसार) 8. निर्दिष्ट और वैज्ञानिक लेख, संवाद परम्पराएं, कथाएं, मत्र और आरती देवताओं को शहद की आहुतियां हैं। जो इसे जानता है और नित्य इनका पाठ करता है, वह देवताओं को शहर की आहुति देता है और वे आदि (पूर्वोक्तानुसार) 9. इन वैदिक आहुतियों के लिए चार वषट्कार हैं, जब हवा चले, बिजली चमके, बादल गरजें, वृक्षादि गिरें तो जो व्यक्ति जानता है, यह इन्हें क्रम से पढ़ें। यह पाठ अनवरत रहना चाहिए। जो ऐसा करता है, वह एक ही बार मृत्यु को प्राप्त होता है और ब्रह्म में लीन हो जाता है। यदि वह तीव्रता से न भी पढ पाए, उसे देवताओं से संबद्ध अंश का पाठ करना चाहिए। इस प्रकार वह अपने जीवित प्राणियों से वंचित नहीं होगा।''

9.5, 7, 1: ''अब वैदिक साहित्य के अध्ययन का गुणगान आता है। जो अध्ययन–अध्यापन प्रिय है, ऐसा कार्य करने वाला व्यक्ति धैर्यवान होता है, किसी के अधीन नहीं होता। वह सफल मनोरथ होता है। उसे सुखद निद्रा आती है, वह अपना वैद्व स्वयं है। अपने मन पर नियंत्रण रखता है, उसका चित्त स्थिर रहता है, यश और बुद्धि बढ़ती है, मानवजाति को शिक्षित करने की क्षमता रखता है। इस प्रकार शिक्षित पुरूष ब्राह्मण है। वह चार अधिकारों का पात्र है। आदर, दक्षिणा, दमन मुक्ति और वध के भय से मुक्ति। 2. दोनों लोकों में जो श्रेष्ठ जाने जाते हैं, उसमें वेदों का अध्ययन करते रहना चाहिए। 3. जब कोई व्यक्ति वैदिक मंत्रों का अध्ययन करता है, वह सम्पूर्ण यज्ञ करता है अर्थात जो भी उसे जाने वैसे अध्ययन करे आदि आदि। 4 और ऐसा व्यक्ति भी जो उबटन से सुगंधित हो, रत्नाभूषित हो, भोजन में तृप्त हो और सुख शैल पर आसीन हो, वेदों का अध्ययन करता है तो वह सर्वांग तप करता है, यह जानते हुए अध्ययन करता है उसे आदि। 5. ऋग्वेद की ऋचाएं मधु हैं, सामवेद की घी, यजुस की अमृत, जब कोई वाको–वाक्य पढ़ता है या पौराणिक आख्यान पढ़ता है तो वे दोनों उबले दूध और पके मांस की आहुतियों के समान है। 6. जो यह जानकर नित्यप्रति ऋग्वेद के मंत्र पढ़ता है, वह देवताओं को मधु से संतुष्ट करता है और वे प्रसन्न होकर उसके सभी मनोरथ पूर्ण करते हैं। 7. और जो यह जानकर नित्य साम मंत्र पढ़ता है, वह देवताओं को घी से संतुष्ट करता है और वे संतुष्ट होकर (यथोपरि) 10. पानी बहता है, सूर्य और चन्द्रमा घूमते हैं, नक्षत्र घूमते हैं। यदि किसी दिन ब्राह्मण वेदाध्ययन नहीं करता, वह दिन उसके लिए ऐसा ही है जैसे घूमने वाले ये तत्व स्थिर हो जाएं। इसलिए यह अध्ययन आवश्यक है। कोई व्यक्ति जब ऋग्वेद, सामवेद अथवा यजुस की आहुति दे रहा हो अथवा किसी गाथा या काव्य का पाठ कर रहा हो तो इस बीच उसे टोका न जाए।

मनु जो शतपथ ब्राह्मण की पुष्टि करते हैं, कहते हैं:

वेदों पितरों की देवताओं की और पुरूषों की दिव्य आंखें हैं, ये मानव की शक्ति और समझ के बाहर हैं यह निष्कर्ष, जो परम्पराएं वेद विहीन हैं और सभी विधर्मी मत परलोक में वृथा हैं क्योंकि उनका आधार ही अंधकार है। वेदों की परिधि के अतिरिक्त अन्य ग्रंथ उभरते हैं और नष्ट हो जाते हैं। सभी निर्मूल्य हैं और झूठे हैं। चार वर्ण, तीन लोक, चार आश्रम जैसे थे, वैसे हैं और आगे वैसे ही रहेंगे। ये वेद वर्णित हैं। जिन पदार्थों में स्पर्श, स्वाद ध्वनि, रूप और गंध है, इन सबका ज्ञान वेदों में हैं। उनकी उत्पति गुण, लक्षण और कर्म भी हैं। शाश्वत वेद चराचर के रक्षक है। इसलिए मेरे विचार में वह इस जगत, मानव सेवा के निर्देश, राजसी अधिकार, न्याय प्रक्रिया, और विश्व–सत्ता का मुख्य तत्व है, बस वही सुपात्र है, जो वेदों को जानता है। जैसे शक्ति पाकर अग्नि हरे वृक्षों तक को जला देती है इसी प्रकार वेद–ज्ञाता अपनी आत्मा के दोषों को पचा लेता है, जो उसके कार्यों से जन्में हों। जो वेदों का मूल तत्व जानता है, वह जीवन के किसी भी मोड़ पर क्यों न हो, ब्रह्मलीन होने को अग्रसर हैं, इहलोक में उसके लिए यह संभव है।

फिर भी, मनु को संतोष नहीं है। वह और आगे बढ़ जाते हैं और नए सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं –

श्रुति का अर्थ है–वेद, स्मृति का अर्थ है–विधान, उनके विषय को किसी तर्क से चुनौती नहीं दी जा सकती क्योंकि इनसे कर्त्तव्य–बोध होता है। जो ब्राह्मण बौद्धिक लेखों पर विश्वास रखते हैं, वे ज्ञान के इन दो प्राथमिक स्त्रोतों की अवमानना करते हैं। गुणीजन उन्हें वेदों के प्रति संशयवादी और विद्रोही जानकर उनका बहिष्कार कर दे। .....13. जो कर्तव्य ज्ञान चाहते हैं, उसके लिए श्रुति सर्वश्रेष्ठ स्त्रोत है।

साभार :
बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर
संपूर्ण वाङ्मय खण्ड–8
पेज संख्या 189 से 191 तक
डॉ.बी.आर.अम्बेडकर

सामाजिक क्रान्ति के पितामह : महात्मा फुले

जिन्होंने हिन्दू समाज की छोटी जातियों को, उच्चवर्णों के प्रति उनकी गुलामी की भावना के संबंध में जागृत किया और जिन्होंने विदेशी शासन से मुक्ति पाने से भी सामाजिक लोकतंत्र (की स्थापना) अधिक महत्वपूर्ण है, इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया उस आधुनिक भारत के महानतम शूद्र महात्मा फूले की स्मृति में सादर समर्पित। यह पंक्तियां उन डॉ. आंबेडकर की है जिनका मानना था, अगर इस धरती पर महात्मा फुले नहीं जन्म लेते, तो अंबेडकर का भी निर्माण नहीं हो पाता। उसी डॉ. आंबेडकर ने 10 अक्टूबर 1946 को अपनी चर्चित रचना शूद्र कौन थे? को महात्मा फुले के नाम समर्पित करते हुए, उपरोक्त पंक्तियां लिखी थी। जिसे फुले के विषय में डॉ. आंबेडकर जैसे भारत के सर्वकाल के सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी ने इतना आदर प्रदर्शित किया, उनके बारे में, उनके ही एक समकालीन चितपावन ब्राह्मण विष्णु शास्त्री चपलूणकर, जिन्हें ब्राह्मण साहित्यकार मराठी भाषा का शिवाजी कहते थे, ने उपेक्षा से कहा था फुले को कौन जानता है? उनका नाम तो सिर्फ माम्बुर्डा से हड़पकर (उस समय पुणे की दो शूद्र बस्तियां) तक ही सीमित हैं। चिपलूणकर ने भले ही उपरोक्त बात उपहास में कही थी, लेकिन यह भी सही है कि पुणे के सीमित क्षेत्र में लोकप्रियता के शिखर को छूने के लगभग 100 वर्ष बाद ही फुले सर्वभारतीय स्तर पर जाने गए। इसका बहुलांश श्रेय कांशीराम को जाता है। उन्होंने दलित–शोषित समाज के शिक्षित लोगों के साथ लेकर बामसेफ के माध्यम से सामाजिक क्रांति के आंदोलन को मजबूत बनाने के उद्देश्य से जो प्रयास किये, उससे आम लोग भले ही उनके कृतित्व से पूरी तरह वाकिफ न हो। पर इतना तय है कि पढ़े–लिखे लोग अंततः यह तो जान ही गए हैं कि फुले महानतम बहुजन नायक थे। वही फुले एक निम्न जाति में जन्म ग्रहण करने के उपरन्त भी अपनी जीवितावस्था में ही 'महात्मा' के खिताब से अलंकृत हुए थे। पर यह सम्मान तो उन्हें अपने जीवन की शेष बेला से मिला। उसके पहले तो.....

17 नवम्बर, 1817 को मानवता के इतिहास का क्रूरतम अध्याय लिखने वाले पेशवा राज्य का अंत हो चुका था और पुणे में कानून की नजरों में सबको एक करने वाली अंग्रेजी सल्तनत कायम हो चुकी थी। फिर भी वह दौर पूरी तरह से खत्म नहीं हुआ था, जब अस्पृश्यों को पुणे के रास्तों से गुजरते समय अपना पद–चिन्ह मिटाने के लिए कमर में झाड़ू और थूकने के लिए गले में हांडी बांधकर चलना पड़ता। तब भी अतिशूद्रों का अबाध रूप से सुबह–शाम, जब व्यक्ति की परछाईं दीर्घतर हो जाती है, रास्तों पर निकलना शुरू नहीं हुआ था। किसी ब्राह्मण को उनकी परछाईं का स्पर्श दूषित न कर दे, इसलिए जब वे अत्याज्य कार्यवश रास्तों पर निकलते तो कमर में बंधी टीन की प्लेट पीटते चलते ताकि अस्पृश्य के आगमन का संकेत पाकर ब्राह्मण देवता हीं छिप सकें। स्पृश्य समझे जाने वाले शूद्रों की दशा भी अतिशूद्रों से अधिक अच्छी नहीं थी। ऐसे समय में 1927 में जोतीराव गोविन्दराव फुले ने एक ऐसे माली परिवार में जन्म लिया जिसे पेशवा ने प्रसन्न होकर 36 एकड़ जमीन दान दी थी। अतः अपेक्षाकृत सम्पन्न पिता की संतान होने के कारण उन्हें बेहतर शिक्षा मिली। लेकिन एक घटना ने उनके जीवन की धारा ही बदल दी। युवक जोती एक ब्राह्मण की बारात में गए थे जहां उन्हें किसी ने पहचान लिया और एक शूद्र होते हुए तुमने हम लोगों के साथ चलने की हिमाकत कैसे की? कहकर ब्राह्मणों ने न सिर्फ जमकर पिटाई कर दी बल्कि बुरी तरह अपमानित करके बारात से भगा भी दिया। अपमान से जर्जरित युवक जोती ने उसी क्षण ब्राह्मणशाही से टक्कर लेने का संकल्प किया जिसके लिए शिक्षा को ही उसने हथियार के रूप में इस्तेमाल करने की योजना बनाई। इस प्रक्रिया में जन्म हुआ गुलामगिरी नामक विस्फोटक रचना का। पर गुलामगिरी तो उसके हथियार का चरम इस्तेमाल थी जो 1873 में जनता के बीच आई। उसके पहले तो कुछ सामाजिक संस्कार के काम करने थे जो उन्होंने अपनी धर्मपत्नी सावित्रीबाई फुले को साथ लेकर ऐतिहासिक अंदाज में अंजाम दिये।

ब्राह्मणशाही से टकराने का मतलब ब्राह्मणों द्वारा फैलाए गए आडम्बर, अन्धविश्वास, अशिक्षा, अस्पृश्यता इत्यादि से लड़ना था। इसके लिए उन्होंने तमाम उपलब्ध ग्रंथों का अध्ययन किया। टॉमस पेन के मनुष्य के अधिकार नामक ग्रंथ ने उन्हें नई प्रेरणा दी। ब्राह्मणों एवं ब्राह्मणवाद से टकाराने के लिए उन्होंने शिक्षा की अहमियत को नये सिरे से जाना। शिक्षा के प्रचार से ब्राह्मणों द्वारा फैलाए गए अंधविश्वास, अज्ञानता से शूद्रातिशूद्रों तथा नारी जाति को निजात दिलाया जा सकता है, यह उपलब्धि कर उन्होंने अपने घर से ही अभियान शुरू किया। 3 वर्ष की उम्र में जोतिराव का विवाह 3 जनवरी, 1831 को जन्मी 9 वर्षीय सावित्री बाई से हुआ था। उन्होंने अपनी पत्नी और दूर की रिश्ते की विधवा बुआ सगुणाबाई क्षीरसागर, जिन्होंने उनकी मां के मरने के बाद उनकी देखभाल की थी, को खुद ही पढ़ाना शुरू किया। दोनों को मराठी भाषा का उत्तम ज्ञान प्राप्त कर लिया। उन दिनों पुणे में मिशेल नामक एक ब्रिटिश मिशनरी महिला नार्मल स्कूल चलाती थी। जीतीराव ने वहीं सावित्रीबाई और सगुणा को तीसरी कक्षा में दाखिल करवा दिया जहां से दोनों ने अध्यापन कार्य का भी प्रशिक्षण लिया। फिर तो शुरू हिन्दू–संस्कृति के विरूद्ध अभूतपूर्व विद्रोह।

जिस हिन्दू–संस्कृति का गौरवगान कर आज हिन्दू राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया चलाई जा रही है उसका एक अन्यतम वैशिष्ट्य ज्ञान संकोचन रहा है, जिसका शिकार शूद्र और नारी बने। इन्हें ज्ञान क्षेत्र से दूर इसलिए रखा गया कि ज्ञान हासिल करने के बाद ये दैविक–दासत्व (डिवाइन–स्लेवरी) से मुक्त हो जाते। और डिवाइन–स्लेवरी से मुक्त होने का मतलब शोषक समाज के चंगुल से मुक्ति। जोतीराव फुले यही तो चाहते थे। इसलिए उन्होंने 1 जनवरी, 1848 को पुणे में एक बालिका विद्यालय की स्थापना कर दी, जो किसी भारतीय द्वारा, बौद्धोत्तर भारत में स्थापित पहला बालिका विद्यालय था। सावित्रीबाई फुले ने इस विद्यालय में शिक्षिका बनकर आधुनिक भारत की पहली अध्यापिका बनने का गौरव हासिल किया। इस विद्यालय की सफलता से उत्साहित होकर फुले दंपत्ति ने 15 मई, 1848 को पुणे की अछूत बस्ती में अस्पृश्य लड़के–लड़कियों के लिए भारत के इतिहास में पहली बार विद्यालय की स्थापना की। थोड़े ही अन्तराल में इन्होंने पुणे और उसके पार्श्ववर्ती गांवों में 18 स्कूल स्थापित कर दिए। चूंकि हिन्दुओं में शूद्रतिशूद्रों और नारियों का शिक्षा ग्रहण व दान धर्मविरोधी आचरण है, इसलिए हिन्दू धर्म विरोधी शैक्षणिक गतिविधियों से फुले दंपत्ति को दूर करने के लिए धर्म के ठेकेदारों ने जोरदार अभियान चलाया। जब सावित्रीबाई स्कूल जाने के लिए निकलतीं, वे लोग उनपर गोबर–पत्थर फेंकते और भद्दी–भद्दी गालियां देते। लेकिन लम्बे समय तक यह करके जब वे सफल नहीं हुए तो शिकायत फुले के पिता तक पहुंचाई। पुणे के धर्माधिकारियों का विरोध इतना प्रबल था कि उनके पिता को यह कहना पड़ा, या तो अपना स्कूल चलाओ या मेरा घर छोड़ दो। फुले ने गृह निष्कासन का वरण किया। इस निराश्रित दंपत्ति को पनाह दी शेख ने। फुले ने अपने कारवां में शेख साहब की बीबी फातिमा शेख को भी शामिल कर, अध्यापन का प्रशिक्षण दिलाया। फिर अछूतों के एक स्कूल में अध्यापन का दायित्व सौंपकर, फातिमा शेख को उन्नीसवी सदी की पहली मुस्लिम अध्यापिका बनने का अवसर मुहैया कराया।

लेकिन नारी–शिक्षा, अतिशूद्रों की शिक्षा के अतिरिक्त समाज में और कई वीभत्स समस्याएं थीं जिनके खिलाफ पुणे के हिन्दू कट्टरपंथियों के डर से, किसी ने अभियान चलाने की पहलकदमी नहीं की थी। लेकिन फुले थे सिंह पुरूष और उनका संकल्प था समाज को कुसंस्कार व शोषणमुक्त करने का। लिहाजा ब्राह्मण विधवाओं के मुंडन को रोकने के लिए नाइयों को संगठित करना, विश्वासघात की शिकार विधवाओं (जो ज्यादातर ब्राह्मणी होती थी) की गुप्त व सुरक्षित प्रसूति, उनके अवैध माने जाने वाले बच्चों के लालन–पालन की व्यवस्था विधवाओं के पुनर्विवाह की वकालत, सती तथा देवदासी प्रथा का विरोध भी बढ़–चढ़कर फुले दंपति ने किया। इस प्रक्रिया में सावित्रीबाई फुले आधुनिक भारत की पहली समाजसेविका कहलाईं। फुले ने अपनी गतिविधियों को यहीं तक सीमायित न कर किसानों, मिल–मजदूरों, कृषि–श्रमिकों के कल्याण तक भी प्रसारित किया था। निश्चय ही इन कार्यों के मध्य उन्होंने अस्पृश्यों की शिक्षा के प्रति उदासीनता बरतने पर, 19 अक्टूबर, 1882 को हंटर आयोग के समक्ष जो निवेदन रखा, उसे भी नहीं भुलाया जा सकता है। वैसे तो फुले ने शिक्षा और समाज सुधार के क्षेत्र में अतुलनीय कार्य करते हुए सर्वजन समाज का भला किया किन्तु बहुजन समाज सर्वाधिक उपकृत उनके चिंतन व लेखन से हुआ है। छिटफुट रचनाओं के अतिरिक्त उनकी सर्वाधिक चर्चित पुस्तकें हैं ब्राह्मणों की चालाकी, किसान का कोड़ा और गुलामगिरी जिनमें उन्होंने सदियों से प्रचारित धार्मिक व सामाजिक अवधारणाओं को छिन्न–भिन्न करके रख दिया है। इनमें 1 जून, 1873 को प्रकाशित गुलामगिरी का प्रभाव तो युगान्तरकारी रहा है।

गुलामगिरी के विषय में विद्वान सांसद शरद यादव ने गुलामगिरी–हमारा घोषणापत्र नामक अपने आलेख में लिखा है–मूलतः 1873 में प्रकाशित जोतीराव की पुस्तक गुलामगिरी तात्कालिक सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ शूद्रों और अछूतों का घोषणापत्र था। जिस तरह कार्ल मार्क्स ने 1848 में पश्चिम यूरोप के औद्योगिक समाज के सबसे ज्यादा शोषित और उत्पीड़ित समाज के अधिकारों को रेखांकित करते हुए कम्युनिष्ट पार्टी का घोषणापत्र निकाला था, उसी तरह जोतीराव ने गुलामगिरी प्रकाशित कर भारत के सबसे अधिक शोषित एवं उत्पीड़ित तबके के अछूतों एवं शूद्रों के अधिकारों की घोषणा की। जिन लोगों ने गुलामगिरी को पढ़ा नहीं है और वर्तमान में चर्चित सामाजिक न्याय के स्त्रोतों को समझा नहीं है, उनके लिए शरद यादव की टिप्पणी हजम करना मुश्किल है। किन्तु सच्चाई यही है कि तुलना सटीक है।

फुले भारतीय समाज की बीमारी को जानते थे। इसलिए उन्होंने अपने ग्रन्थ **गुलामगिरी** द्वारा पहला, दैविक–दासत्व दूर करने, दूसरा शोषितों में भ्रातृभाव पैदा करने और तीसरे प्राचीन आरक्षण–व्यवस्था (वर्ण–व्यवस्था) की खामियों को दूर करने पर बल दिया। दैविक–दासत्व दूरीकरण और भ्रातृत्व स्थापना के लिए उन्होंने प्रधानतः पुनर्जन्म के विरूद्ध घोर संग्राम चलाया। तो वेद, ब्राह्मण–ग्रन्थ, वेदान्त और सभी धर्म–ग्रन्थों, ईश्वर को शोषक आयों की साजिश करार देकर इनकी धार्मिक पवित्रता की धज्जियां उड़ा दी। संवाद शैली में रचित गुलामगिरी में उन्होंने धोंडीराव से जो संवाद किए हैं, वह लोगों में ईश्वर भय दूर करता है एवं शोषणकारी वर्ण–व्यवस्था को ईश्वरकृत न मानने का स्पष्ट रास्ता सुझाता है। इस तरह यह ग्रंथ, शोषितों को दैविक–दासत्व से मुक्त करने में का आधारभूत काम किया। दूसरे, धर्म ग्रन्थ, ईश्वर इत्यादि को जन्म देने वालों को उन्होंने बलिष्ठतापूर्वक आर्य प्रमाणित किया। इस प्रक्रिया में भारत के शोषितों में मूलनिवासीवाद की संकल्पना जन्मी। इसी मूलनिवसीवाद का आर्य बनाम द्रविड़ के रूप में प्रचार चलाकर पेरियार ने दक्षिण भारत में परम्परागत शासक जाति की सत्ता का विनाश कर दिया। दक्षिण भारत के बाहर मूलनिवासीवाद दक्षिण के राज्यों जैसा प्रभावी न होने के बावजूद इतना तो कहा ही जा सकता है कि यह शोषितों में भाईचारा पैदा कर एक दूसरे के निकट लाने में सबसे प्रभावशाली भूमिका अदा कर रहा है। आज संसद और विधानसभाओं में दलितों के साथ पिछड़ों का प्रतिनिधित्व बढ़ा है तो फुले के मूलनिवासीवाद के चलते। शोषितों की दैविक–दासत्व से मुक्ति और मूलनिवासीवाद के माध्यम से उनमें बन्धुता पैदा करने के बाद, हिन्दू–आरक्षण (वर्ण–व्यवस्था) में देश के संसाधनों से उनमें बन्धुता पैदा करने के बाद, हिन्दू–आरक्षण (वर्ण–व्यवस्था) में देश के संसाधनों और उच्चमान के लाभकारी पेशों के वितरण में हुई गड़बड़ियां सुधारना भी फुले के सामने बड़ा लक्ष्य था। इसके लिए उन्होंने गुलामगिरी में लिखा–हमारी दयालु सरकार (अंग्रेज सरकार) ने भट–ब्राह्मणों की उनकी संख्यानुसार सरकारी कार्यालयों में नियुक्ति नहीं करना चाहिए, ऐसा मेरा कहना नहीं है। किन्तु उसके साथ ही अन्य छोटी जातियों के लोगों की उनकी जनसंख्या के अनुसार नियुक्ति होनी चाहिए। इससे सभी भट–ब्राह्मण सरकारी नौकरों के लिए एक साथ मिलकर, हमारे अज्ञानी शूद्रों को नुकसान पहुंचाना संभव नहीं होगा।

गुलामगिरी की उपरोक्त पंक्तियां ही भारत में सामाजिक न्याय का मूलमंत्र बनीं। आज दलित पिछड़ों की शासन–प्रशासन व डाक्टरी, इंजिनियरिंग, अध्यापन व छोटे–बड़े विभिन्न सेवाओं में जो भागीदारी मिली है, उसमें उपरोक्त पंक्तियों की महती भूमिका है। इन्हीं पंक्तियों को पकड़कर शाहूजी महाराज ने अपनी रियासत में 26 जुलाई, 1902 को आरक्षण लागू कर सामाजिक न्याय की शुरूआत की तो पेरियार ने 27 दिसम्बर, 1929 को मद्रास प्रान्त में बड़े पैमाने पर दलित–पिछड़ों को नौकरियों में प्रतिनिधित्व दिलया। संविधान में डॉ. आंबेडकर ने दलितों के लिए आरक्षण सुलभ कराने के साथ धारा 340 का जो प्रावधान रखा उससे मंडलवादी आरक्षण की शुरूआत हुई। मंडलवादी आरक्षण के पीछे गुलामगिरी की भूमिका को पहचान कर ही शायद वी.पी.सिंह नें फुले के प्रति श्रद्धा इन शब्दों में व्यक्त की है–महात्मा फुले भारत की बुनियादी क्रान्ति के पहले महापुरूष थे। इसलिए वे आद्य महात्मा बुद्ध–महावीर, मार्टिन लूथर, नामक आदि के उत्तराधिकारी थे, उनका यह समर्पित जीवन आज के युग का प्रेरणास्त्रोत बना है।

साभार :
वर्ण व्यवस्था एक वितरण व्यवस्था
पेज संख्या 178 से 182 तक
एच. एल. दुसाध

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

मास्टर माइंड सिद्धांत

कॉन्फ्रेंस में भाग ले रहे प्रतिभागी अगले दिन सुबह जल्दी हॉल में पहुँच गए। वे खास तौर पर इसलिए रोमांचित थे, क्योंकि उन्हें बताया गया था कि आज तो सबक सिखाया जाएगा, वह अमीरी की चाबी को समझने में बहुत महत्वपूर्ण साबित होगा। कुछ श्रोताओं ने पिछले दिन के सबक से उत्साहित होकर रात भर अपनी जिंदगी के संदर्भ में प्रेम के अर्थ व अभिव्यक्ति के बारे में सोचा था। बाकी लोग शाम को सिखाए गए प्रेम के सबक के बारे में थोड़ी दुविधा महसूस कर रहे थे। वे आशा कर रहे थे कि आज का सबक भी वक्ता के पिछले सिद्धांतों की तरह ही व्यावहारिक होगा।

बहरहाल, आज के सबक में कल का मुद्दा जारी रहा। जब श्रोता हॉल में दाखिल हुए, तो उन्हें जोड़ी बनाकर बैठने के लिए कहा गया। हर व्यक्ति से कहा गया कि वह किसी व्यक्ति को चुनकर उसके पास बैठे। जिन लोगों ने ऐसा करने से इंकार किया, उनसे कहा दिया गया कि वे बाहर चले जाएँ, क्योंकि जोड़ी बनाकर ही वे उस दिन के सबक का पूरा फायदा उठा सकते हैं। वक्ता के इस अजीब आग्रह का कारण किसी को समझ में नहीं आया, बहरहाल ज्यादातर श्रोताओं ने उसकी बात मानने का फैसला किया। उन्हें यह विश्वास था कि पिछले सबकों की तरह ही आज भी उन्हें जो जानकारी मिलेगी, वह सफलता पाने के लिए अमूल्य साबित होगी।

श्रोताओं के बैठ जाने के लगभग दस मिनट बाद वक्ता मंच पर आया। इस बार उसके साथ एक महिला भी थी। वह उसी की हमउम्र थी, बहरहाल यह बताना मुश्किल था कि वह उसकी पत्नी थी, सहयोगी थी या विश्वसनीय मित्र थी। प्रतिभागियों ने सोचा कि यह रहस्य भी जल्दी ही खुल जाएगा। वक्ता ने माइक्रोफोन पकड़ा और अपनी मेहमान का हाथ थामा। फिर वे दोनों मंच के पास वाली सीढ़ियों की तरफ बढ़े और श्रोताओं के ठीक सामने खड़े हो गए।

वक्ता ने बोलना शुरू किया, ''मास्टर माइंड सिद्धांत सभी बड़ी सफलताओं का आधार है। यह समूची मानवीय प्रगति की नींव का अति महत्वपूर्ण पत्थर है, चाहे वह प्रगति व्यक्तिगत हो या सामूहिक। यह सिद्धांत प्रबल शक्ति हासिल करने की कुंजी देता है। मास्टर माइंड सिद्धांत की परिभाषा यह है कि इसमें दो या उससे अधिक मस्तिष्कों का गठबंधन होता है, जो पूरे सामंजस्य और सहयोग की भावना से किसी निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एकजुट होकर काम करते हैं। इसकी शक्ति की कुंजी सामंजस्य है। अगर सामंजस्य न हो, तो सामूहिक प्रयास में सहयोग का भाव तो हो सकता है, पर उसमें वह शक्ति नहीं होगी, जो एकरूपता की बदौलत सामंजस्य से मिल सकती है।

मास्टर माइंड सिद्धांत से जुड़ी महत्वपूर्ण अवधारणाएँ ये हैं :

अवधारणा 1

मास्टर माइंड सिद्धांत के माध्यम से व्यक्ति दूसरों के अनुभव, प्रशिक्षण, शिक्षा, विशेषज्ञीय ज्ञान और नैसर्गिक प्रतिभा का पूरा लाभ ले सकता है। वह दूसरों के मस्तिष्क का उसी तरह प्रयोग कर सकता है, जैसे वह उसका खुद का मस्तिष्क हो।

अवधारणा 2

दो या अधिक मस्तिष्कों का गठबंधन जब किसी निश्चित लक्ष्य को पाने के लिए पूरे सामंजस्य में होता है, तो दोनों ही व्यक्तियों को बहुत प्रेरणा मिलती है और वे आस्था की मानसिक अवस्था में पहुँच जाते हैं। (इस प्रेरणा का विचार और इसकी शक्ति अटूट मित्रता तथा प्रेम के संबंधों में मिलती है।)

अवधारणा 3

हर मानवीय मस्तिष्क विचारों को प्रसारित और ग्रहण करने वाला रेडियो स्टेशन होता है। मास्टर माइंड सिद्धांत का प्रेरक प्रभाव विचार के सूक्ष्म संप्रेषण को प्रेरित करता है, जिसे आम तौर पर टेलीपैथी के नाम से जाना जाता है, जो छठी इंद्रिय के माध्यम से काम करती है।

इस तरह कई व्यावसायिक गठबंधन साकार हो जाते हैं। मास्टर माइंड के सिद्धांत के जरिये दूसरों के विचारों का लाभ उठाए बिना शायद ही कभी किसी ने प्रबल या स्थायी भक्ति हासिल की होगी।

यह बात ही मास्टर माइंड सिद्धांत की शक्ति और महत्व का पर्याप्त प्रमाण है। यह एक ऐसी सच्चाई है, जिसे हर व्यक्ति बिना ज्यादा कोशिश किए खुद आजमाकर देख सकता है।

अवधारणा 4

मास्टर माइंड सिद्धांत पर जब सक्रियाता से अमल किया जाता हैं, तो इससे व्यक्ति अपने और अपने साथियों के अवचेतन मस्तिष्क को दोहन कर सकता है। इससे मास्टर माइंड द्वारा हासिल किए गए कई चमत्कारिक परिणामों का कारण समझ में आ जाता है।

अवधारणा 5

मास्टर माइंड सिद्धांत पर अमल करने से इन सब महत्वपूर्ण मानवीय संबंधों में लाभ होता है :

(1) विवाह में

(2) धर्म में

(3) नौकरी या व्यवसाय के संबंध में।

मास्टर माइंड सिद्धांत की बदौलत ही थॉमस ए. एडिसन महान आविष्कारक बन पाए, हालाँकि उनके पास शिक्षा और विज्ञान के ज्ञान की कमी थी। उनके उदाहरण से उन लोगों की उम्मीद जाग सकती है, जिन्हें यह गलतफहमी होती है कि औपचारिक शिक्षा की कमी की वजह से वे तरक्की नहीं कर सकते हैं।

मास्टर माइंड सिद्धांत की मदद से व्यक्ति भू–विज्ञानियों के ज्ञान की मदद से पृथ्वी के इतिहास और रचना को समझ सकता है।

रसायनशास्त्री के ज्ञान और अनुभव की मदद से व्यक्ति रसायनशास्त्र का प्रशिक्षण लिए बिना इस विषय का व्यावहारिक उपयोग कर सकता है।

वैज्ञानिकों, तकनीशियनों, डॉक्टरों और मैकेनिकों की मदद से व्यक्ति इनमें से किसी भी क्षेत्र में व्यक्तिगत प्रशिक्षण लिए बिना सफल आविष्कारक बन सकता है, जैसा एडिसन ने किया था।

गठबंधनों का महत्व

मास्टर माइंड गठबंधन आम तौर पर दो तरह के होते हैं:

1. विशुद्ध सामाजिक या व्यक्तिगत कारणों से होने वाले गठबंधन। जैसे रिश्तेदारों, धार्मिक सलाहकारों और मित्रों के साथ होने वाले गठबंधन। इस तरह के गठबंधनों में किसी तरह के भौतिक लाभ का लक्ष्य नहीं होता है। इस तरह का सबसे प्रमुख गठबंधन पति–पत्नी के बीच होता है।

2. व्यावसायिक और आर्थिक प्रगति के लिए होने वाले गठबंधन। ये उन लोगों के बीच होते हैं, जिनका कोई सामूहिक उद्देश्य या लक्ष्य होता है, जो गठबंधन का आधार होता है।

अब हम मास्टर माइंड की शक्ति के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण देखे।

अमेरिका के संविधान में जिस तरह की सरकार की अवधारणा है, उसका हमें सबसे पहले विश्लेषण करना चाहिए, क्योंकि यह शक्ति का एक ऐसा रूप है, जो हमारे देश के हर नागरिक को और काफी हद तक पूरी दुनिया को प्रभावित करता है।

हमारे देश को इन तीनों बातों के लिए जाना जाता है :

1. यह दुनिया का सबसे अमीर देश है।
2. यह दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश है।
3. यह अपने नागरिकों को किसी अन्य देश की तुलना में ज्यादा व्यक्तिगत स्वतंत्रता देता है।

अमीरी, स्वतंत्रता और शक्ति। कितना जबर्दस्त तालमेल है।

इन लाभों का स्त्रोत ढूँढ़ना मुश्किल नहीं है, क्योंकि ये हमें हमारे संविधान और पूँजीवाद से मिले हैं। इनका तालमेल इस तरह से सामंजस्यपूर्ण बनाया गया है, जिससे लोगों को आध्यात्मिक और आर्थिक दोनों तरह की शक्ति मिले, जो दुनिया में पहले कभी नहीं देखी गई।

हमारी सरकार एक वृहद मास्टर माइंड गठबंधन है, जो सभी देशवासियों के सामंजस्यपूर्ण संबंध से बना है। यह गठबंधन 50 अलग–अलग समूहों यानी राज्यों के माध्यम से काम करता है। अमेरिकी मास्टर माइंड का केंद्र समझने के लिए हम सरकार की तीन शाखाओं की जाँच करते हैं, जिन्हें इस देश की जनता नियंत्रित करती है। ये हिस्से हैं :

1. कार्यपालिका शाखा (जिसे राष्ट्रपति नियंत्रित करता है)
2. न्यायिक शाखा (जिसे सुप्रीम कोर्ट नियंत्रित करती है)
3. विधायी शाखा (जिसे संसद के दोनों सदन नियंत्रित करते हैं)

हमारे संविधान को इतनी समझदारी से बनाया गया है कि सरकार की इन तीनों शाखाओं को नियंत्रित करने की शक्ति जनता में होती है। यह एक ऐसी शक्ति है, जिससे लोगों को तब तक वंचित नहीं किया जा सकता, जब तक कि वे इसके इस्तेमाल में स्वयं लापरवाही न बरतें।

हमारी राजनीतिक शक्ति हमारी सरकार द्वारा व्यक्त होती है। हमारी आर्थिक शक्ति पूँजीवादी तंत्र द्वारा व्यक्त होती है। और इन दोनों की कुल शक्ति हमेशा दोनों के सामंजस्य के बराबर होती है। इस तरह हासिल की गई शक्ति सबकी संपदा होती है। इसी शक्ति ने इस देश के नागरिकों को दुनिया की सबसे अच्छी जीवनशैली दी है और इसी ने हमारे देश को दुनिया का सबसे अमीर, स्वतंत्र और शक्तिशाली देश बनाया है।

हम इस शक्ति को ''अमेरिकी जीवनशैली'' कहते हैं।

अमेरिका उद्योग–धंधों में भी मास्टर माइंड के उदाहरण नजर आते हैं। यह यातायात और संचार तंत्र में नजर आता है। हमारी रेलों और हवाई जहाजों, हमारे टेलीफोन और संचार तंत्रों का प्रबंधन करने वाले लोगों ने एक ऐसा सेवा–तंत्र स्थापित किया है, जिसका कोई अन्य देश मुकाबला नहीं कर सकता। उनकी कार्यकुशलता से उत्पन्न शक्ति पूरी तरह से मास्टर माइंड सिद्धांत या सामंजस्य पर निर्भर करती है।

मास्टर माइंड सिद्धांत की शक्ति का एक और उदाहरण हमारी सेना है, जिसमें हमारी थल सेना, नौ सेना और वायु सेना सामंजस्य में काम करती हैं। बाकी उदाहरणों की तरह यहाँ भी प्रयासों के सामंजस्य में ही शक्ति की कुंजी होती है।

खेल की टीमें आपसी सामंजस्य द्वारा शक्ति हासिल करने का एक और उत्कृष्ट उदाहरण है।

दरअसल हर सफल उद्योग मास्टर माइंड के सिद्धांत के परिणाम हैं। पूरा अमेरिकी पूँजीवादी तंत्र उस आर्थिक शक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसे मित्रतापूर्ण व सामंजस्यपूर्ण गठबंधन के प्रयासों द्वारा हासिल किया गया।

एंड्रयू कारनेगी ने यह स्वीकार किया था कि वे इसी सिद्धांत की बदौलत अमीर बने। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इसी के माध्यम से उन्होंने अमेरिका की एक बहुत बड़ी कंपनी बनाई थी। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि उनके मास्टर माइंड में सबसे छोटे कर्मचारी से लेकर सबसे बड़े मैनेजर तक सभी कर्मचारी शामिल थे।

कारनेगी अपनी कंपनी के कर्मचारियों को ही प्रमोशन देकर मैनेजर और सुपरवाइजर के पद पर नियुक्त करते थे। वे मास्टर माइंड सिद्धांत को इतनी अच्छी तरह समझते थे कि उन्होंने हर कर्मचारी को प्रेरित किया कि वह ज्यादा ऊँचे पद का लक्ष्य बनाकर अपने अवसर का अधिकतम लाभ उठाए।

जिस व्यक्ति को उन्होंने दुनिया के सामने व्यक्तिगत सफलता की फिलॉसफी प्रस्तुत करने का मौका दिया, उसने कारनेगी के सहयोग से महानतम मास्टर माइंड गठबंधन का लाभ उठाया।

इस गठबंधन में कारनेगी के स्तर के 500 से अधिक उद्योगपति शामिल थे और यह गठबंधन 20 साल से ज्यादा समय तक चला। इस दौरान गठबंधन में शामिल हर उद्योगपति ने इस फिलॉसफी के लेखक को अपने व्यावसायिक औद्योगिक अनुभव का पूरा लाभ दिया।

इस गठबंधन ने दुनिया को यह बताया कि इस फिलॉसफी के पहले तीन सिद्धांतों पर अमल करके प्रबल शक्ति हासिल की जा सकती है। वे तीन सिद्धांत ये हैं : (1) एक मील ज्यादा आगे तक जाने की आदत, (2) निश्चित लक्ष्य, और (3) मास्टर माइंड।

इस काम की प्रेरणा निश्चित लक्ष्य से मिली। लक्ष्य दुनिया के सामने एक कारगर फिलॉसफी प्रस्तुत करना था। भौतिक सफलता पाने वाले लोगों के अनुभवों के आधार पर इस फिलॉसफी ने आकार लिया। यह एक निःस्वार्थ उद्देश्य था, क्योंकि इसका लक्ष्य दूसरों को लाभ पहुँचाना था।

इस लक्ष्य को पाने में जिन लोगों ने अहम भूमिका निभाई, वे पहले से ही दौलतमंद और सफल थे। बहरहाल, उन्होंने अपना ज्ञान दूसरों के साथ बाँटने के लाभ को पहचाना और उस आर्थिक तंत्र की हानियों को भी पहचाना, जो बहुत से लोगों के बजाय बहुत कम लोगों को फायदा पहुँचाता है।

इस गठबंधन के सभी व्यक्तियों ने एक मील ज्यादा आगे तक जाने के सिद्धांत पर अमल किया। उन्होंने पैसे या फीस लिए बिना अपने समय और अनुभव का योगदान दिया। वे लोगों तक एक ऐसी फिलॉसफी के लाभ

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

पहुँचाना चाहते थे, जो महान अमेरिकी जीवनशैली की नींव थी– एक ऐसी नींव, जिसने अमेरिका को दुनिया का सबसे अमीर और स्वतंत्र देश बना दिया।

इस विशिष्ट मास्टर माइंड गठबंधन की शक्ति की लाभों को पूरी तरह समझने के लिए आपको अपनी कल्पनाशक्ति का प्रयोग करना होगा। जरा सोचिए, अगर 500 महान अमेरिकी उद्योगपति 20 साल तक आपके मार्गदर्शक और प्रशिक्षक बन जाएँ और वे कोई फीस या पैसे लिए बिना आपको लगातार मार्गदर्शन देते रहें, तो क्या होगा।

सफल उद्योगपतियों के इतने बड़े सामूहिक गठबंधन से आपकों उस ज्ञान और अनुभव का पूरा लाभ मिलेगा, जो अमेरिकी पूँजीवाद के विकास से उत्पन्न हुआ है। अगर आप इस ज्ञान का सर्वश्रेष्ठ उपयोग करेंगे, तो आपकी सफलता तय है।

गरीब से गरीब आदमी भी इस सिद्धांत से लाभ उठा सकता है, बशर्ते वह किसी व्यक्ति को चुनकर उसके साथ सामंजस्यपूर्ण गठबंधन बना ले। इस सिद्धांत का सबसे गहन और शायद सबसे लाभकारी उपयोग वैवाहिक जीवन में संभव है। वैवाहिक जीवन में मास्टर माइंड गठबंधन किया जा सकता है, बशर्ते इसके पीछे प्रेम का उद्देश्य हो। इस तरह का गठबंधन न सिर्फ पति–पत्नी के मस्तिष्कों को सामंजस्य में लाता है, बल्कि उनकी आत्माओं के आध्यात्मिक गुणों को भी एकरूप कर देता है। इस तरह के गठबंधन के लाभ से न सिर्फ दोनों जीवनसाथी खुश और सुखी होते हैं, बल्कि उनके बच्चों को भी उत्तम चरित्र का वरदान मिलता है और वे सफल जीवन के मूलभूत सिद्धांत सीखते हैं।

मास्टर माइंड सिद्धांत का उत्कृष्ट उदाहरण

आइए, हम अतीत के पन्नों में झाँकें और पचास साल पीछे जाकर एक परिवार को देखें। इस परिवार के मास्टर माइंड संबंध की बदौलत एक महान औद्योगिक साम्राज्य का उदय हुआ, जो आज लाखों पुरूषों और महिलाओं को रोजगार देता है।

दृश्य की शुरूआत उनके छोटे से घर के किचन से होती है।

पति एक गैसोलिन इंजन के मॉडल पर काम रहा है। उसकी पत्नी आँखों में दवा डालने वाले ड्रॉपर से इंजन में एक–एक बूँद गैसोलिन डाल रही है। पति स्पार्क प्लग से उस गैसोलिन में चिंगारी निकलवाने की कोशिश कर रहा है। कई हफ्तों की न थकाने वाली मेहनत के बाद–न थकाने वाली इसलिए, क्योंकि उन्हें एक–दूसरे के प्रेम का सहारा था– गैसोलिन में चिंगारी पकड़ ली और इंजन के पहिए घूमने लगे।

इस प्रयोग के पीछे धन की शक्ति नहीं थी। इसके पीछे उन दोनों के निश्चित लक्ष्य के सिवाय और कोई शक्ति नहीं थी, जिन्होंने उसे पाने के लिए मास्टर माइंड गठबंधन बना लिया था।

और इस प्रयोग के पीछे कोई तात्कालिक या प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ की उम्मीद भी नहीं थी। यह तो एक मील ज्यादा आगे तक जाने के सिद्धांत पर अमल करके किया गया था।

लेकिन यह कोशिश सफल हुई और अमेरिका में पहली व्यावहारिक कार हकीकत बन गई।

फिर इस मास्टर माइंड गठबंधन में कुशल मैकेनिक शामिल हुए। इसके अलावा कुछ दोस्त और परिचित भी शामिल हुए, जिन्होंने कारों के उत्पादन के लिए आवश्यक पूँजी लगाई।

उस समय की तुलना में आज कार–उत्पादन बहुत बढ़ चुका है। लेकिन यह सब उन्हीं दो लोगों के मास्टर माइंड गठबंधन का परिणाम है।

उस उत्पादन के पीछे जो व्यक्ति था, वह उन 500 उद्योगपतियों में से एक है, जिससे हमने सिद्धांत सीखे हैं। उसकी जिंदगी के अनुभव हमारी सफलता की फिलॉसफी को गढ़ने में बहुत उपयोगी साबित हुए हैं। शायद ही अब किसी को यह बताने की जरूरत पड़े कि उस उद्योगपति का नाम क्या था? उनका नाम हेनरी फोर्ड था।

जैसे–जैसे फोर्ड का उत्पादन बढ़ता गया, उनका मास्टर माइंड समूह भी बढ़ता गया। इसमें मैकेनिक, इंजीनियर, केमिस्ट्स, रिसर्च टीम, वित्तीय विशेषज्ञ, सेल्समैन और कई प्रकार के कुशल श्रमिक आ गए। इतने बड़े काम के लिए गठबंधन में इन सबका शामिल होना भी जरूरी था।

मास्टर माइंड गठबंधन की मदद से फोर्ड ने अपने मस्तिष्क को कई हजार गुना ज्यादा शक्तिशाली बना लिया। इस गठबंधन के बिना वे अपनी विशाल औद्योगिक गतिविधियाँ नहीं चला सकते थे। यह गठबंधन लगभग एक सदी से चल रहा है और यह आगे भी चलता रहेगा, क्योंकि इसकी शक्ति से सभी को लाभ होता है।

और यहाँ पर ध्याने दें कि कोई भी मास्टर माइंड गठबंधन तब तक नहीं टिक सकता, जब तक कि उससे सभी संबद्ध लोगों को लाभ न हो।

सामूहिक प्रयास की शक्ति हासिल करने से पहले अपने मास्टर माइंड गठबंधन के उद्देश्य को अच्छी तरह से समझ लें। अगर आप स्थायी शक्ति हासिल करना चाहते हैं, तो यह सुनिश्चित करें कि इसका इस्तेमाल ऐसे उद्देश्य से हो रहा हो, जिससे गठबंधन के सभी लोगों को लाभ हो।

शक्ति बहुत खतरनाक या बहुत उपयोगी हो सकती है। सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि इसका इस्तेमाल कैसे किया जाता है। मास्टर माइंड से प्रबल शक्ति मिलती है और शक्ति के बाकी रूपों की तरह ही इसका इस्तेमाल भी सकारात्मक या नकारात्मक तरीके से किया जा सकता है।

पूरी मानव जाति का इतिहास इसकी सच्चाई को प्रमाणित करता है। सुकरात, प्लेटो और अरस्तू से लेकर विलियम जेम्स और राल्फ वाल्डो इमर्सन के युग तक हर महान दार्शनिक ने इसे पहचाना और बताया है।

बिजली इंसान की सेवा करती है, लेकिन अगर गलत उद्देश्य से इसका इस्तेमाल किया जाए, तो यह किसी की जान भी ले सकती है। ऐसी कोई अच्छी चीज नहीं हैं, जिसका विनाशकारी प्रयोग न किया जा सकता हो। भोजन जीवन के लिए जरूरी है और सही उपयोग होने पर यह स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है। लेकिन यदि भोजन का गलत इस्तेमाल किया जाए या बहुत ज्यादा भोजन कर लिया जाए, तो यह जहर की तरह नुकसान भी कर सकता है।

मास्टर माइंड के उत्तरदायित्वपूर्ण प्रयोग का महत्व

आपके सामने इंसान की शक्ति के महानतम स्त्रोत यानी मास्टर माइंड सिद्धांत का विश्लेषण किया जा चुका है। अब इसके सही और उत्तरदायित्वपूर्ण प्रयोग की जिम्मेदारी आपकी है।

अगर आप हेनरी फोर्ड की तरह इसका प्रयोग करेंगे, तो आपको भी उन्हीं जैसे वरदान मिलेंगे। आपको भी दुनिया में उतना ही सम्मान मिलेगा, आपको भी संबंधों में उतनी ही मित्रता या सहयोग मिलेगा, जितना फोर्ड को मिला था। सब यह जानते हैं कि किसी अन्य उद्योगपति के बजाय फोर्ड का उनके साथियों द्वारा ज्यादा सम्मान किया जाता था।

फोर्ड का मास्टर माइंड अपने करीबी सहयोगियों और तकनीकी स्टाफ के साथ सामंजस्यपूर्ण गठबंधन तक ही सीमित नहीं था, बल्कि यह उससे काफी आगे तक गया। इसमें अमेरिकी जनता भी शामिल थी, जिसने हाथिये पर खड़े होकर उन्हें सफलता के शिखर पर पहुँचते देखा – हमारी–आपकी तरह के लोग, जो सशक्त व्यावसायिक और व्यक्तिगत फिलॉसफी को पहचानते हैं तथा इसके प्रयोग का सम्मान करते हैं।

हम चाहते हैं कि सब लोग मास्टर माइंड शक्ति का फोर्ड की तरह इस्तेमाल करें, क्योंकि अमेरिका के औद्योगिक इतिहास में व्यक्तिगत सफलता का उनसे बेहतर उदाहरण दूसरा नहीं है। उन्होंने जितने भी लोगों के जीवन पर प्रभाव डाला, लगभग सभी को लाभ पहुँचाया। हमें यह नहीं लगता कि फोर्ड को इस बात का पूरा एहसास था कि उन्होंने अमेरिकी जीवन पर कितना ज्यादा प्रभाव डाला।

हेनरी फोर्ड के नियंत्रण में मास्टर माइंड शक्ति एक वरदान साबित हुई। किसी कम भविष्य–दृष्टि वाले व्यक्ति के हाथ में यह शाप या खतरा भी बन सकती थी। यहाँ हमारा उद्देश्य फोर्ड की प्रशंसा करना नहीं है, बल्कि उनका विश्लेषण करना है, ताकि उन सब लोगों को प्रेरणा मिले, जो जिंदगी में आगे बढ़ना और प्रगति करना चाहते हैं।

हेनरी फोर्ड और विभिन्न व्यवसायों के 500 अन्य उत्कृष्ट उद्योगपतियों का विश्लेषण करते समय जब इस फिलॉसफी के 17 सिद्धांतों पर उनका परीक्षण किया गया, तो फोर्ड बाकी सबसे बहुत आगे थे। पहले तीन सिद्धांतों – एक मील ज्यादा आगे तक जाना, निश्चित लक्ष्य और मास्टर माइंड– में उनका स्कोर 100 प्रतिशत से भी ज्यादा था। ''ज्यादा'' का मतलब यह है कि उन्होंने इन तीन सिद्धांतों का असाधारण प्रयोग किया इसी वजह से वे इतने सफल हुए और दुनिया भर में उनका इतना अच्छा प्रभाव पड़ा।

और हमें यह याद रखना चाहिए कि उनकी मास्टर माइंड गठबंधन की पहली सदस्य–उनकी पत्नी– जिंदगी भर इस गठबंधन में पहले स्थान पर रहीं। फोर्ड पर उनका गहरा प्रभाव था। दरअसल यह प्रभाव इतना गहरा था कि यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अगर श्रीमती फोर्ड नहीं होती, तो महान फोर्ड औद्योगिक साम्राज्य भी वर्तमान रूप में नहीं होता।

हेनरी फोर्ड गलतियाँ करते थे। उनमें से कुछ गलतियाँ निर्णय के कारण होती थीं। बाकी गलतियाँ ऐसे कारणों से होती थीं, जो उनके नियंत्रण में नहीं थे। जो लोग उनके सक्रिय जीवन की हकीकत जानते हैं, वे आपको बताएँगे कि फोर्ड दो बड़ी गलतियाँ की थीं और जैसे ही उन्हें इनका पता चला, उन्होंने अपनी विचार शक्ति और पहल शक्ति के माध्यम से उन्हें तत्काल सुधार लिया।

कितना बढ़िया रिकॉर्ड है।

इसका अनुसरण करके आप भी अमेरिकी जीवनशैली में अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं। यही नहीं, आपको जो पारिश्रमिक मिलेगा, उसकी गणना भी चक्रवृद्धि ब्याज पर चक्रवृद्धि ब्याज की दर से होगी।

वक्ता ने बोलना बंद कर दिया। एक श्रोता ने सकुचाते हुए अपना हाथ उठाया। यह पहला सवाल था, जो वक्ता से किसी ने पूछा था।

श्रोता बोला, ''माफ कीजिए।''

वक्ता ने उस श्रोता की तरफ सिर उठाते हुए कहा, ''हाँ, कहिए।''

श्रोता ने पूछा, ''मैं सिर्फ यह जानना चाहूँगा कि आज हमसे जोड़ियाँ बनाकर साथ–साथ बैठने के लिए क्यों कहा गया है।?

वक्ता ने सवाल के महत्व को स्वीकार करते हुए अपनी भौंहें उठाई और जवाब दिया, ''ओह, मैं तो यह भूल ही गया था। धन्यवाद। मैंने आपकी जोड़ियाँ इसलिए बनाईं, ताकि आप यहाँ बैठे किसी एक सदस्य को पूरी तरह जानने के लिए थोड़ा समय निकालें। आप उनसे जो सीख सकते हों, सीखें और उनके साथ भविष्य में मास्टर माइंड गठबंधन बनाने के बारे में विचार करें। हालाँकि सबसे अच्छा गठबंधन विवाह है, लेकिन वह जिंदगी का सिर्फ एक पहलू है। आप जिससे भी मिलते हैं, उसमें यह क्षमता होती है कि वह आपके लक्ष्यों को पाने में आपकी मदद कर सकता है। अपने पास बैठी साथी को जानने के लिए अगर आप आज कुछ मिनट का समय निकालेंगे, तो आप पाएँगे कि आप दोनों के पास एक–दूसरे को देने के लिए बहुत कुछ है। मैं आपको कल इस बारे में ज्यादा बताऊँगा कि इस फिलॉसफी के महान प्रशिक्षक एंड्रयू कारनेगी के मास्टर माइंड सिद्धांत के बारे में क्या विचार थे।

इस दौरान मैं आपमें से हर व्यक्ति का आव्हान करता हूँ कि वह अपने निश्चित प्रमुख लक्ष्य बना ले। अगर आपने अब तक ऐसा न किया हो, तो इसी समय ऐसा कर लें। कुछ मिनट का समय निकालकर अपने पार्टनर को अपने जीवन का प्रमुख लक्ष्य बताएँ। उसकी मदद से अपने लक्ष्य को संशोधित या परिवर्तित करें, ताकि आपका लक्ष्य सर्वश्रेष्ठ ढंग से आपकी सेवा कर सके।

याद रखें : अपना लक्ष्य बनाते समय ज्यादा ऊँचा लक्ष्य बनाने से न घबराएँ। यह न भूलें कि आप अवसरों से भरे देश में रहते हैं। आप यहाँ जितनी चाहे, उतनी दौलत हासिल कर सकते हैं, बशर्ते आप बदले में पर्याप्त मूल्यवान सेवा देने के इच्छुक हों।

जिंदगी में अपना लक्ष्य निश्चित करने से पहले जेसी बी. रिटनहाउस की इन पंक्तियों को याद कर लें, जिसका शीर्षक है, ''मेरी तनख्वाह,'' जो उनकी पुस्तक **द डोर ऑफ्र ड्रीम्स** से ली गई हैं और इनमें सिखए सबक को दिल में बैठा लें:

मैंने जिंदगी से एक सिक्के की तनख्वाह माँगी
और जिंदगी ने मुझे इससे ज्यादा नहीं दिया।
बहरहाल, जब मैंने अपना खाली भंडार देखा,
तो मैंने शाम को ज्यादा तनख्वाह माँगी।
जिंदगी एक न्यायपूर्ण मालकिन है
यह आपको उतना ही देती है, जितना आप माँगते हैं,
लेकिन जब आप अपनी तनख्वाह तय कर लेते हैं,
तो आपको उसी तनख्वाह पर ही काम करना होगा।
मैंने एक मजदूर की तनख्वाह पर काम किया,
बाद में मुझे यह जानकर निराशा हुई
कि मैं जिंदगी से चाहे जितनी तनख्वाह माँग सकता था,
और जिंदगी मुझे वह खुशी–खुशी देती।

सफल लोग जिंदगी से गरीबी का सौदा नहीं करते हैं। वे जानते हैं कि एक शक्ति है, जिसके द्वारा जिंदगी से अपनी शर्त पर पारिश्रमिक पाया जा सकता है। वे जानते हैं कि यह शक्ति अमीरी की चाबी पाने वाले हर व्यक्ति के पास होती है। वे इस असीमित शक्ति की प्रकृति जानते हैं। वे जानते हैं कि इसका नाम सिर्फ एक शब्द का है, जो अंग्रेजी भाषा का सबसे महान शब्द है।

इस शब्द को सब लोग जानते हैं, लेकिन इसकी शक्ति के रहस्य को बहुत कम लोग जानते हैं।

साभार :

अमीरी की चाबी आपके हाथ में

पेज संख्या 93 से 105 तक नेपोलियन हिल

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

पंकज गौतम

अधिशाषी अभियन्ता
बैराज निर्माण–2, कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अजय बौद्ध

सुपरिंटेंडेंट सी.जी.एस.टी.
सर्वोदय नगर, कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

राजीव कुमार चौधरी

लेखाधिकारी, नगर निगम अलीगढ़
मो0 9897454089

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रोशन लाल

फोरमैन सिविल इंजी. विभाग
हरकोर्ट बटलर प्राविधिक विश्वविद्यालय, कानपुर
मो० : 9839791024

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सुरेश चन्द्र

शाखा कार्यालय सहायक
यूनाइटेड इण्डिया इन्श्यूरेन्स क0 लि0
कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आर के आजाद

सहायक मण्डल प्रबन्धक
भारतीय जीवन बीमा निगम
मण्डल कार्यालय पी.एस. विभाग, कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

श्याम हरि

रि0 डिपो मनैजर
उ0प्र0 राज्य हथकरघा निगम लि0 कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

कमलेश कुमार

प्रधान सहायक
हरकोर्ट बटलर प्राविधिक विश्वविद्यालय, कानपुर
मो० : 9005201853, 7007615951

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सुरेश चन्द्र

डिपो मनैजर/नाजीर
उ0प्र0 राज्य हथकरघा निगम लि0 कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आर.एल. मौर्य

सहायक सचिव (ग्रा.सं.प्र./दावा)
भा.जी.बी.निगम उ.म.क्षेत्र कार्यालय कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

तेजपाल सोलंकी

राष्ट्रीय भीमसेना प्रदेश संयोजक, म.प्र.
मो.: 9179825381

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

राजकुमार

कनिष्ठ सहायक
कार्यालय श्रमायुक्त जी.टी.रोड, कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रतिमा रानी

प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय श्रमायुक्त जी.टी.रोड, कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

धर्मेन्द्र कुमार

अनुभाग पर्यवेक्षक (भर्ती)
कार्यालय चीफ पी एम जी
उ.प्र. लखनऊ

केन्द्रीय कार्यालय
सचिव बामसेफ
मो.:7376765479

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

इं. यसीन खान

अधिशासी अभियन्ता
कानपुर प्रखण्ड निचली गंगा नहर, कानपुर नगर उ0प्र0

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

धर्मेन्द कुमार

कनिष्ठ लिपिक
नगर निगम कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाए .....

कन्हैया

लेखा प्रभारी
अपर श्रमायुक्त कार्यालय, कानपुर क्षेत्र, कानपुर
मो० : 9506359801

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अभिजीत डिजाइन स्टूडियो

आर्किटेक्ट, प्लानर, इन्टीरियर, स्ट्रक्चर, सर्वेयर, स्टीमेट एवं भवन, प्लाट सम्बन्धी सभी कार्य।

हमारे यहाँ KDA नगर निगम, जिलापंचायत के नक्शे भी पास किये जाते हैं।

मो0 9452294670, 8737020370, 9450135355
www.abhijeetdesignstudio.com

आर्किटेक्ट अभिनव राजन (बी.आर्क)
सी.ओ.ए. एप्रूव्ड/ रजिस्ट्रर्ड

एल.जी.–11, चन्द्रघण्टा मार्केट, केशवपुरम् आवास विकास–1, कल्यानपुर कानपुर – 208017

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाए .....

आनन्द मोहन

संयुक्त आयुक्त

हथकरघा एवं वस्त्र उद्योग, कानपुर

राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद

की ओर से समस्त कर्मचारी साथियों/मित्रों को

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

मेवालाल

क्षेत्रीय अध्यक्ष

मिनी. एसो० लोक निर्माण विभाग

सम्प्रेक्षक रा.क.स.प.कानपुर

मो. 9555393443

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

जगजीवन राम

प्रशासनिक अधिकारी

मण्डलीय अध्यक्ष

अखिल भारतीय अनु. जाति जनजाति एवं बुद्धिष्ट

भारतीय जीवन बीमा निगम कर्मचारी कल्याण संघ

मो.: 9450134953

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

वीरेन्द्र कुमार भारतीय

सहायक लेखाधिकारी

श्रमायुक्त कार्यालय उ0प्र0, कानपुर

मो.: 9451318112

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाए .....

रामचरन

पम्प आपरेटर

कानपुर विकास प्राधिकरण

मो० : 9984251800

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाए .....

विजय गौतम

लेखाकार

कोषागार कानपुर नगर

मो० : 9696222033

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

मधु पत्नी राजेन्द्र कुमार कुरील

जीवन एवं स्वास्थ्य बीमा अभिकर्ता (एजेन्ट)

मो० : 9838239138

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ .....

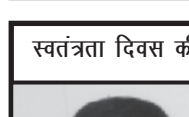

अर्चना कैथवार

प्रशासनिक अधिकारी

उपाध्यक्ष

लेबर डिपार्टमेन्ट मिनिस्टीरियल

एम्प्लाइज एसोसिएशन उ0प्र0

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाए .....

भूप सिंह

लिपिक

कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर

मो० : 9455646040

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रताप सिंह

प्रशासनिक अधिकारी

मुख्य अभियंता कार्यालय, लोक निर्माण विभाग, कानपुर

मो.: 9415430469

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाए .....

के. पी. वर्मा

उपायुक्त

हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग निर्देशालय, कानपुर

मो० : 9415268129

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाए .....

रामनरेश | महेन्द्र कुमार

महासचिव (आई.टी.सेवा) अध्यक्ष

एस.सी./एस.टी. एम्पलाइस वेलफेयर एसोसिएशन, आयकर विभाग, कानपुर

मो.: 7599101755

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाए .....

रामस्वरूप

प्रशासनिक अधिकारी

श्रमायुक्त कार्यालय जी0टी0 रोड, कानपुर

मो.: 8318468803

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाए .....

के. के. वर्मा

वरिष्ठ सहायक

उर्सला अस्पताल, कानपुर

मो० : 9415430319

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाए .....

अजय कुमार

लिपिक

कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर

मो० : 7905305856

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाए .....

नीतू जैसवार

भाषा अनुदेशक हिन्दी

राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान महिला

लाल बंगला, कानपुर, मो. : 9838291001

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

चन्दा गौतम

निजी सचिव

आयकर विभाग, कानपुर उ0प्र0

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाए .....

धीरेन्द्र कुमार

लिपिक

कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर

मो० : 9305218844

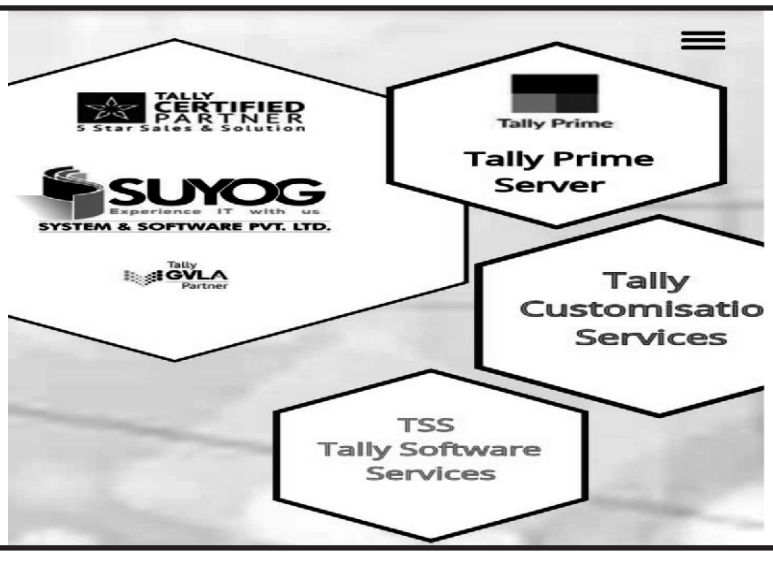

Get in touch

117/111, C-5, Second Floor, Mandir Marg
Sarvodaya Nagar, Kanpur
Uttar Pradesh – 208005, India

+91 9889107777
+91 9839119556

preet.kalsi@suyog.net
ygulati@suyog.net

Government of India / भारत सरकार
Ministry of Labour & Employment / श्रम एवं रोजगार मंत्रालय,
Directorate General of Employment / रोजगार महानिदेशालय
National Career Service Centre for SC/STs / अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति हेतु राष्ट्रीय आजीविका सेवा केन्द्र
Regional Employment Exchange Campus / प्रादेशिक सेवायोजन कार्यालय परिसर
G.T. Road, Kanpur-208005 / जी0टी0 रोड, कानपुर–208005
Ph. No. : 0512-2970822

निःशुल्क कोर्स अनुसुचित जाति/जन जाति हेतु

The detail of Courses/Training Programmes with eligibilty criteria is as under :-

S. No.	Name of the courses	Duration of the courses	Age Limit	Minimum Qualification	Maximum Family Income	Books & Stationery & Stipend Rs. 1000/- Per month	Likely to be Commenced
1	Special Coaching Scheme (Slenography)	01 Year	18-27 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	July - June
2	'O' Level Computer Software training through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	July - June
3	'O' Level Computer hardware training through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	July - June
4	Office Automation Accounting and Publishing Assistant through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	July - June
5	Computer Application and Business Accounting Asscoiate through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	July - June
6	Cyber Secured web Development Associated through NIELIT	01 Year	18-30 years	10+2 Passed	Rs. 3.00 lakh per annum	Free	July - June

Desirous SC/STs jobseekers may visit www.ncs gov.in or www doe gov.in and submit their application to the National Career Service for SC/STs where the candidate is interested for participating in the above said program. Candidates would be considered for only one course. The candidates may indicate their choice of courses in order of their preferences

Raj Kumar
सब रिजनल इम्प्लायमेन्ट ऑफिसर
एन.सी.एस.सी.फॉर एस.सी./एस.टी., कानपुर
Mob. No. 7988193472

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

जो कुछ मैं कर पाया हूँ, वह जीवन–भर मुसीबतें सहन करके विरोधियों से टक्कर लेने के बाद ही कर जाया हूँ। जिस कारवां को आप यहां देख रहे हैं, उसे मैं अनेक कठिनाइयों से यहां ले आ पाया हूँ। अनेक अवरोध जो इसके मार्ग में आ सकते हैं, के बावजूद इस कारवां को बढ़ते रहना है। अगर मेरे अनुयायी इसे आगे ले जाने में असमर्थ रहें, तो उन्हें इसे यहीं पर छोड़ देना चाहिए, जहां पर, यह अब है। पर किन्हीं भी परिस्थितियों में इसे पीछे नहीं हटने देना है। मेरी जनता के लिए मेरा यही संदेश है।

डा. भीमराव अम्बेडकर

सेवा में,

नाम .....

पता .....

.....

.....

जल अमूल्य निधि है

आजादी का अमृत महोत्सव

जल ही जीवन है

जलकल विभाग, नगर निगम, कानपुर

जल संरक्षण के हित में उपभोगताओं से अपील

क्रम सं०	क्या करें	क्रम सं०	क्या न करें
1–	जलकल विभाग द्वारा आपूर्ति अथवा इण्डिया मार्क–।। हैण्डपम्प का पानी पानी पीने में प्रयोग करें।	1–	अनाधिकृत रूप से ठेलियों/ट्राली पर पानी बेचने वालों के पानी का प्रयोग न करें।
2–	आपकी पाइप लाइन नाली अथवा किसी अन्य गन्दे स्थान से हो कर जा रही हो तो पंजीकृत प्लम्बर से उसका मार्ग परिवर्तित करा लें अथवा इस पर केसिंग पाइप अवश्य लगवा लें। सर्विस पाइप लाइन पुरानी अथवा क्षतिग्रस्त हो गयी हो तो उसे तत्काल बदलवा लें। अन्यथा गन्दा पानी पेयजल को प्रदूषित करेगा।	2–	पानी की लाइन में बूस्टर पम्प लगा कर, सीधे पानी न लें। यदि आवश्यक हो तो टब अथवा टैंक में जलकल के नल से पानी एकत्र कर उसे बूस्टर पम्प द्वारा ऊपर चढ़ायें।
3–	हैण्डपम्प का प्लेट फार्म साफ रखें।	3–	हैण्डपम्प के चारों तरफ गन्दा पानी एवं गन्दगी न एकत्र होने दें।
4–	गन्दा पानी आने पर जलकल विभाग के क्षेत्रीय कार्यालय अथवा जलकल विभाग के कन्ट्रोल रूम नं०–9235553827 पर फोन कर अवगत करायें।	4–	सीवर मेनहोल में कूड़ा करकट न डालें तथा मेनहोल खुला होने पर तत्काल कन्ट्रोल रूम को सूचित करें।
5–	जलकल विभाग की पाइप लाइन में लीकेज/सीवर समस्या होने पर तत्काल जलकल विभाग के कन्ट्रोल रूम नं०–9235553827 पर इसकी जानकारी दें।	5–	पानी लेने के बाद नल/स्टैण्ड पोस्ट खुला न छोड़ें। पानी का भण्डारण करें व अपव्यय रोकें।
6–	पानी एकत्र करने के लिये ढक्कन युक्त साफ बर्तन का प्रयोग करें।	6–	पानी के बर्तन में हाथ न डालें, पानी निकालने के लिये लम्बे हैन्डल के बर्तन का प्रयोग करें।

जन सामान्य के अच्छे भविष्य हेतु जल–संरक्षण

1– बैठकों सेमीनारों प्रदर्शनियों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जहाँ पेयजल आवश्यक हो, एक लीटर के पानी के बोतल के स्थान पर 250–300 मिली० के पानी के बोतल का इस्तेमाल किया जाये, जिससे इस अमूल्य धरोहर को अपव्यय से बचा जा सके।

2– जन सामान्य पानी पीने हेतु छोटे बर्तन/गिलास का उपयोग करें। प्रायः यह देखा जाता है कि लोग बड़े गिलास/बर्तन में पानी लेकर एक या दो घूँट पानी पीने के बाद शेष पानी फेंक देते हैं। इस लिये उतना ही पानी लिया जाये जिसे पिया जा सके।

3– प्रायः यह देखा जाता है कि लोग पीने के पानी (ट्रीटेड) से अपने लान, किचेन, गार्डेन, फूलों की क्यारियों की सिंचाई तथा गर्मियों में घरके सामने की सड़क भिगातें हैं ताकि धूल न उड़े। जनमानस से अनुरोध किया जाता है कि पेयजल की महत्ता को पहचाने एवं इस अमूल्य धरोहर/संसाधन को अपव्यय से बचने का प्रयास करें।

4– ताजा पानी के उपयोग हेतु सायं/विगत दिवस में संरक्षित पीने के पानी को न फेंके/बर्बाद न करें उसे अन्य कार्य में उपयोग में लायें।

5– सर्विस स्टेशनों द्वारा गाड़ी धोने में पीने के पानी का प्रयोग न करें।

6– कन्ट्रोल रूम का नं०–9235553826, 27 पर जलकल विभाग से सम्बन्धित समस्याओं की सूचना दी जा सकती है।

नोट – जलकल/जलमूल्य/सीवर कर के बिलों का भुगतान समय से कर छूट का लाभ प्राप्त करें। बिलों का भुगतान जलकल विभाग की वेबसाइट www.jalkalkanpur.in पर आन लाइन भी जमा किये जा सकते हैं।

महाप्रबन्धक	नगर आयुक्त	महापौर
के. पी. आनन्द	शिव शरणअप्पा जी.एन.	प्रमिला पाण्डेय

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।